

आर्य समाज

६३७

श्री गुरु

नमो नमो

1854
1854

1854

या
ॐ यो दा कः पाठुः श्रुतिः थ नवा तं लं अमिह रु न ॥ ॥ वज्र स्यादिकुं ठं दू आ व
स मखन क ॥ ॥ ॐ सर्व क वा व स मा न य मा रु यः क चूर आ क र्क य सा दा ॥ ॥ अ
सि वृ त्तं जः जा प या द न क थ ज व स श या ॥ ॥ सा स मा सि वृ ज ज ना न मू त कि
हं क हः श व स म ख ज क ॥ ॥ वृ वृ द पि म द रु चः ति क तुः इ रु व यः क न वि
प रुः ह पि रु चः थ न वृ प या द क थ रुः श व स म हं य क श या ॥ ॥ ह लि

या नः सा व स श न नि सः दू या क रु तं पः वृ ना ग स थ न श या ॥ ॥ ह वि
या नः वृ न क थ या सि नः पा स न हं ला या ना हा थ स न वं श रु व न म ख न
क ॥ ॥ ॐ हि म व न नि व स नि ग व दं न वि स द नं अ ठि न रु ह क थ वा न न
गु ड व क रु र्वा स नि ज मि सा दा ॥ या गी व स न न क पा स म वा य क ॥ या न ग
॥ ॥ वृ ड न गु गु लि क वृ चः स न सि नः कृ कृ म पि य गु नि य व स न ति ताः

न जातिस्थि वजाः थ न नानि स्थः वा या सा न व म यि ता ज दाय क ॥ ॥ उं
गु वृ व न मा ॥ उं ज गि नि य न निः य क सी नि हं का व व ज आ मि स्या हा ॥ ॥ ५१
॥ क अ र म त्र ॥ ॥ उं मा व चित्त क मू षि कु उ कि मि रु यं २ क लि हं रु न स्या हा
॥ ५२ ॥ ॥ य न मू य म त्र ॥ ॥ उं कौ कौ वि नि ता न न हं २ रु न स्या हा ॥ ५३ ॥ ॥ थ म
त्र न म्मा व पा न सः स र्वा न ची यः स क न ता ली जा गया दा ज न क रि कु ना स ॥ ॥

उं व व नं गे द वृ ज व सा स यु वा न रु स नः २ मू क हि य व मा व व स वृ म हि नि
ः मा ति नि या स क व यि ति षि जा गी नि आ मू क व यि न नि क्क हि २ मू क व न यि य
व माः सि षि म् वृ या व ॥ ५४ ॥ ॥ थ म त्र न रु न तं ज न क व ति कु न रु या ॥ ५५ ॥ ॥ आ का
॥ थ रु न या त्ता य थ रु न रु स म थ रु न हं हं ॥ ५६ ॥ ॥ थ म त्र न य स वा य ॥ ॥ उं हा हं व स
सि षि म स रु व र्वा द म म त्र ॥ ५७ ॥ ॥ थ म त्र न य स वा य ॥ ॥

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
 ॥ कृष्णार्जुनसंवादे ॥ अर्जुन उवाच ॥ द्रुपदमुनि-
 शिष्यं त्वत्पुत्रं त्वया प्रियं ॥ वीर्यवान् धर्मत-
 ः पराक्रमान्वितं बलवान् ॥ १ ॥

[illegible]

यं चोत्तरं तं नो विदुः कथितं त्रैलोक्यं सरस्वती च सा वि
तं कथयति न त्रैलोक्यं च कृतं देवताः कथयन्त्या या
न देवताः ५ इति याज्ञिकं न देवताः ॥ विदुः कथयन्त्या या
त्रैलोक्यं तं देवताः च मकलं ॥ यदा न ॥ १० कं रं ॥
या ॥ ११ मिहं च मा नु तं तया ॥ १२ ॥

नमः ॥ तं कृष्णं तं नो मका दह ॥ यद्विदुः कथयन्त्या या
न देवताः च मकलं ॥ यदा न ॥ १० कं रं ॥
या ॥ ११ मिहं च मा नु तं तया ॥ १२ ॥
यद्विदुः कथयन्त्या या
न देवताः च मकलं ॥ यदा न ॥ १० कं रं ॥
या ॥ ११ मिहं च मा नु तं तया ॥ १२ ॥

[illegible]

वृत्त्यः श्रुतिगतिराधं जादा पुन वञ्चति यादिकं मिथुंतः पुन व
सुपाद पृष्ठा जसल स्वसम विनं कृकृक तः मद्या स पुर्व साग
नि उ रुसागति सिद्ध संदृ उ रुसाति यादिकं ह स्त विराधं कन
रुवि राधं तथा स्वाति वि स्वायाति या नु त वि ट सा स्वा पा द
उकं ज नुलाध अस्त समवि तं वि चू म् त प द्वा रवा ठा

उपमनस्यग. ७४

उत्तापायधवस्तु तउत्तानांतु अयादसतवनवनस्तार्थं मक्रः
धनस्तार्थं सतहिस्य प्रवृत्तदुतिपादिकं कैरु ११ उपवृत्तदुपा
दउत्तुल्लुदुत्रवति समष्टिवितंमिन १२ म स्वचक्रद्व
न सीलः ववृत्त सालरुसद करमिथु वैस्य सीत इक क न
सालरुगद क ४ शिंदुष्ट पा ज ना सील ५ कं न्या सीलं वालग
१२ उ धरा यसादाः धेमायसादाः सिधाय

इति मित्रय सादाः स्वातायसादाः वृत्तायसादाः

७४. ५४

ना ५ पृष्ठमित्रतथा सितुल ~~क~~ लून सत कलः विचि
कला निकक सील ६ ला ७ सील धन न वं त मक्र प्र य द्र
लगा ११ उ रर उं गुरु नमा सादाः खति ५ पः उं कल्प मास
नायदरः पितृ तिल मम आ तल्ला मम द ताः या च्या मंदि न सा
दा ॥ उं किं क्री ल त वि क न सादा धन मगि ज वा ज मा म
स्य ता य सादा ११ ता य सादाः धं ५ य सादाः ह स ना य

सादाः

ॐ सिद्धि गुरु आ ग्याः ॐ कं का। रलिः कालिः २ माहा कालिः
। गविल का। सतिः दाहि हँ रुद्र सादाः धार ११॥ ॥ ॐ गुरु
जाहाः ॐ कतन मय सह धारः ॥ दि च हि हँ रुद्र सादाः सि
चि य चाङ पा हा त धार १॥ ॐ ननर हिरु न ति थ रु न क
स्य सम यज न मु खा हा म स्या क पु य धार ३॥ ॐ श्रि रु य स्या
हाः धम न न धार ३॥ पु यः मि स्या स्या क या॥ ॥ ॐ चंदन रुद्र

नर सु व द सु न हँ हँ रुद्र सादा ४॥ धार २१ का र्य ॥ ॥ ॐ पु नर
चाहा स्य वा यु ल ना सम द्रा ना हँ हँ रुद्र सादाः चि कं सि मि
नं धार २१॥ ॐ ना ना पु चू नि य ता द वि ना य नि हा हँ रुद्र
सादाः ल स रु यं ना ना न क धार १॥ ॐ धि ॥ ॐ सिद्धि गुरु
गुरुः आ ग्याः गुरु लाः आ र्व चू न हि न जा ॥ धार २१ स ता न
मि त्रि ना ह स सा चाङ पा उ हा ल ॥ ॥

२ॐ ज्ञा ॐ हं ॐ रु द सा दा ॥ धा २ १ स त्रामि क र्ज र का य ॥
२ॐ क्लिं क्लिं ल त्र वि क र्ज र सा दाः धन स्वस्ति वा धु ना धि प त्त
न मंः लि खि त्त त्वे स त्त २ ग द दि ग पा न व क्त क र्ज र ऊ मि ग
न स त्त २ ग द क थ र्ज र ष्या मि स्वा दा ॥ ॥ कि नु य क ॥ ॐ धु ज्ञा य
स्वा दा १ ॐ धु मा य स्वा दा २ शिं द्या य स्वा दा ३ ॐ स्वा ना य स्वा
ॐ

सा २ ॐ वि र्वा य स्वा दा ५ ॐ स्व रा य स्वा दा ७ ॐ ग डा य स्वा
दा १ ॐ धां र्ज य स्वा दा ८ ॐ उ मा म द स्व रा य स्वा दा त ॥ २ ॐ ध
य षः ॐ श्री ग्व त्रि ३ दि श्री स्वा दाः धा २ १ स्वा त र्ज पा जः थ म य या द्वा मि सा क्त क ॥
२ ॐ क स य ल ल ना क यि चू वा ष्ठ य ॥ धा २ १ ग र्ज र न व ल वि न दा क या र्ज र
य स रा य र्ज र मू ल ॥ २ ॐ सि द्वि द र ष्ठ ला गि नि वा रा का द्यौ मा त्रि क य र्ज र
गि नि रा का हिं हि र्ज र रु द सा दा ॥ धा २ १ सि द्वि द र ष्ठ पा जः थ म य या द्वा मि सा